>

Title: Need to recognize Eunuchs and provide them with proper identity in the country.

**श्री जयवंत गंगाराम आवले (लातूर) :** भारत के निर्वाचन आयोग और जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक देशभर में एक भी किन्नर नहीं है, यह सुनकर आप चौंक सकते हैं, लेकिन यह सच है। वोटर आई.डी.कार्ड में लिंग वाला कॉलम भरते समय मेल या फीमेल या पुरूष या महिला में से एक आप्शन चुनना पड़ेगा, यानी आयोग मानता है कि देश में एक भी किन्नर नहीं है। किन्नर समाज पहचान के इस दकियानूसी तरीके से बेहद नाराज हैं। देश के किन्नरों का कहना है कि समाज जब हमें एक तीसरी जाति के तौर पर देखता है तो हमें अभी तक इस देश की कोई भी सरकार पहचान दिलाने के बारे में क्यों नहीं सोच पाई है। देश में आज तक किसी भी जनगणना में किन्नरों की गिनती नहीं की गयी है। 2001 की जनगणना के मुताबिक देश में या तो महिलाएं हैं या पुरूष, लेकिन किन्नर समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं है। पहचान की इस लड़ाई में कई सवाल हैं। किन्नरों के लिए वोटर आई.डी. जैसे कार्ड में कोई पहचान नहीं दे रखी है, ऐसे में अगर इन्हें मोबाइल सिम लेना हो, किसी बैंक में खाता खुलवाना हो, तो वोटर आई.डी. की जरूरत पड़ती ही है। लेकिन किन्नरों को इस आई.डी. के नाम पर एक झूठी पहचान ही अपने साथ ढोनी पड़ रही है। किन्नरों का कहना है कि हम हमारे असली घरों से इसलिए ही बेघर हो जाते हैं क्योंकि हम किन्नर हैं, लेकिन सरकार हमें वह पहचान ही नहीं दे रही है।

हाल ही में दिल्ली के नन्दनगरी में किन्नरों के एक सम्मेलन के दौरान आग लग जाने से कई किन्नरों की जान चली गयी। जब उन्हें मुआवजे की बात आई तो किन्नरों के वारिस तथाउनकी पहचान जैसे कई सवाल उठ खड़े हुए थे। ऐसी दुर्घटनाओं के समय में यह किन्नर आज भी कागजों पर केवल औरत या आदमी ही है।

सरकार से मैं कहना चाहूंगा कि देश में किन्नर समाज को पहचान देने की पहल करें।